कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 11, (अप्रैल, 2024)
पृष्ठ संख्या 34–36

केला की उन्नतशील खेती

डॉ मोहम्मद अबू नैय्यर[1], अनुपम सिंह[2], डॉ मनोज कुमार[3], अमृत कुमार सिंह[4] और शिव पूजन[5]

[1,3] मंडन भारती कृषि महाविद्यालय, अगवानपुर, सहरसा. बिहार कृषि विश्वविद्यालय, बिहार

[2,4,5] पीएचडी स्कॉलर (हॉर्टिकल्चर), कृषि विभाग ,इंटीग्रल विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

Email Id: – sanupam554@gmail.com

परिचय

केले को कल्पतरु के नाम से भी जाना जाता है इसके पौधों एव फलों को पूजा में भी इस्तेमाल किया जाता है। भारत देश मे केले के फल का अपना एक अलग स्थान है आम तौर पर आम के बाद सबसे ज्यादा पसंद एव सबसे ज्यादा उपभोग किया जाने वाला फल है। इस फल की साल भर उपलब्धता और अपने औसधि गुणों से भरपूर होने के कारण सबका पसंदीदा फल है।इसका प्रमुख रूप से उत्पादन करने वाले राज्य आंध्रप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र एव उत्तर प्रदेश हैं।

मिट्टी

केले की खेती के लिए मिट्टी का चयन बहुत जरूरी है। इसके लिए पोषक तत्वों से युक्त भूमि का चयन किया जाना चाहिए। भूमि की जांच अवश्य करवा लेनी चाहिए। इसकी खेती के लिए चिकनी बलुई मिट्टी उपयुक्त मानी जाती है। इसके लिए भूमि का पीएच मान 6–7.5 के बीच होना चाहिए।

जलवायु तथा तापमान

केला मूलतः एक उष्ण कटिबंधीय फसल है। इसकी खेती के लिए 13 डिग्री. सें –38 डिग्री. सेंटीग्रेट तापमान अच्छा रहता है। इसकी फसल 75–85 प्रतिशत की सापेक्षिक आर्द्रता में अच्छी तरह बढ़ती है। भारत में ग्रैंड नाइन जैसी उचित किस्मों के चयन के माध्यम से इस फसल की खेती आर्द्र कटिबंधीय से लेकर शुष्क उष्ण कटिबंधीय जलवायु में की जा रही है।

खेत की तैयारी कैसे करें

केला रोपने से पहले हरी खाद की फसल उगाई जानी चाहिए ये मिट्टी के लिए खाद का काम करती है। अब केले की खेती के लिए खेत तैयार करने के लिए जमीन को 2–4 बार जोतकर समतल कर लेना चाहिए। मिट्टी के ठेलों को तोडने के लिए रोटावेटर या हैरो का उपयोग करें तथा मिट्टी को उचित ढलाव दें। मिट्टी तैयार करते समय एफ.वाईएम की आधार खुराक डालकर अच्छी तरह से मिला दी जानी चाहिए।

खाद एवं उर्वरक का प्रबंध

गोबर की सड़ी हुई खाद अच्छी तरह से मिट्टी में मिला दें और रासायनिक खाद के प्रयोग से पहले वे अपने निकटतम कृषि बिज्ञान केंद्र या राज्य कृषि विश्वविद्यालय तथा मृदा स्वास्थ्य परिक्षण प्रयोग शाला में जाकर मिटटी की जांच कराएं उसके रिपोर्ट के अनुसार ही छच्ज्ञ का प्रयोग करें। अगर किसी कारण से मिट्टी की जांच सम्भव नही हो पा रही है तो उस दशा में बारिश का मौसम शुरू होने से पहले यानी जून के महीने में खोदे गए गड्ढों में 8.15 किलोग्राम नाडेप कम्पोस्ट खाद, 150–200 ग्राम नीम की खली, इसके लिए हमेशा सेहतमंद पौधों का चुनाव करना चाहिए। यदि हमारे किसान भाई रासायनिक उर्वरक के स्थान पर जैव उर्वरक जैसे एजोटोबैक्टर, एजोस्पिरिलम या च्ठ का प्रयोग करें तो वह एक मृदा स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होगा तथा फसल का उत्पादन भी बढ़ेगा।

टीसू कल्चर के पौध से लाभ

टीसू कल्चर विधि द्वारा केले की उन्नत प्रजातियों के पौधे तैयार किये जा रहे हैं. टिशू कल्चर वाले पौधो जिनकी ऊँचाई 8 से 10 इंच हो तथा 6 से 7 पत्तियों वाले हो उनको ही पौध रोपण के लिए चयन करना चाहिए।इस विधि द्वारा तैयार पौधों से केलों की खेती करने के अनेकों लाभ हैं ये पौधे स्वस्थ, रोग रहित होते है. पौधे समान रूप से वृद्धि करते है. अतः सभी पौधों में पुष्पन, फलन, कटाई एक साथ होती है, जिसकी वजह से विपणन में सुविधा होती है. फलों का आकार प्रकार एक समान एवं पुष्ट होता है. प्रकन्दों की तुलना में ऊतक संवर्धन द्वारा तैयार पौधों में फलन लगभग 60 दिन पूर्व हो जाता है.

केले पौध की रोपाई करने के लिए गड्ढे तैयार करने की विधि

सामान्यतः केले की पौध का रोपण करने के लिए 45 X 45 X 45 सेमी के आकार के गड्ढे की आवश्यकता होती है। गड्ढों में 10 किलो (अच्छी तरह विघटित हो), 250 ग्राम खली एवं 20 ग्राम कार्बोफ्युरॉन मिश्रित मिट्टी से पुनः भराव किया जाता है। तैयार गड्ढों को खुला छोड़ देना चाहिए ताकि सूरज की धूप उनको लग सकें। इससे हानिकारक कीटों नष्ट होते हैं और मिट्टी को वायु मिलने में मदद मिलती है। ध्यान रहे यदि खेत की मिट्टी क्षारीय है और पी.एच. 8 से ऊपर हो तो गड्ढे के मिश्रण में संशोधन करते हुए कार्बनिक पदार्थ को मिलाना चाहिए।

पौध की रोपाई का समय

जिन क्षेत्रों मे बरसात कम है उन क्षत्रों में बरसात के समय भी रोपाई करनी चाहिए।

किस्मों एव क्षेत्रों के अनुसार थोड़ा सा परिवर्तन है जो पौध से पौध और पंक्ति से पंक्ति की दूरी है वह प्रजातियों पर निर्भर करती हैं जैसे कुछ किसमे बौनी होती हैं

जैसे रोबस्टा, जी–9, हरी छाल इन पौधों की ऊँचाई 5 से 6 फिट के मध्य होती है जिनमे प्रजातियों में पौध से पौध की दूरी 1.5 से 1.75 मीटर तथा पंक्ति से पंक्ति की दूरी 5 से 6 फिट रहना चाहिए।

कुछ प्रजाति मध्यम ऊँचाई की होती है जैसे चम्पा, करपुरवल्ली, काठपुरा इन प्रजातियों में पौध से पौध तथा पंक्ति से पंक्ति की दूरी 2 मीटर रखना चाहिए।

वे प्रजाति जो अधिक ऊंचाई की है जैसे उद्यम लालकेला कैंथली इन प्रजातियों में पौध से पौध तथा पंक्ति से पंक्ति की दूरी 2.5 मीटर तक रखना चाहिए। उत्तर प्रदेश के केला किसानों के लिए 'जी–9' किस्म सबसे सही होती है। ड्रिप सिंचाई की सुविधा हो तो पॉली हाउस में टिशू कल्चर पद्धिति से केले की खेती वर्ष भर की जा सकती है।

पौध रोपण के लिए पुत्ती का चयन

पौधरोपण पौधों की रोपई में तीन माह की तलवारनुमा पुतियां जिनमें घनकन्द पूर्ण विकसित हो, ''जिन पुतियों में चार से छह पत्तियां हों और लम्बाई करीब छह से नौ इंच के बीच हो उन पुतियों की रोपाई करानी चाहिए। इन पुतियों की पत्तियां काटकर रोपाई करनी चाहिए। रोपाई के बाद पानी लगाना आवश्यक है।

केले की पौध की रोपाई का सही तरीका

गढ्ढो के बीचो–बीच मिट्टी के पिन्डी के बराबर छोटा सा गढ्ढा बनाकर पौधे को सीधा रख देना चाहिए. पौधे की जड़ों को बिना हानि पहुचाएं पिन्डी के चारों ओर मिट्टी भरकर अच्छी प्रकार दबा देना चाहिए ताकि सिंचाई के समय मिट्टी में गढ्ढे न पड़ें. बहुत अधिक गहराई में रोपण कार्य नहीं करना चाहिए. केवल पौधे की पिन्डी तक ही मिट्टी भरना चाहिए. इस प्रकार रोपण के बाद 12–13 माह में ही केला की पहली फसल प्राप्त हो जाती है.ऊतक संवर्धन विधि से तैयार पौधों से औसत उपज 30–35 किलोग्राम प्रति पौधा तक मिलती है.

सिंचाई

केला एक अधिक पानी चाहने वाली फसल है इस समय गर्मियों में खेत में इतनी सिंचाई करनी चाहिए, जिससे खेत में नमी बनी रहे। खेत की पानी को सोखने की क्षमता भी ज्यादा होनी चाहिए, जिस से बारिश का पानी ज्यादा समय तक खेत में खड़ा न रह सके।

निराई एव गुड़ाई

केले की खेती में नियमित रूप से निराई एव गुड़ाई जरूरी होती है। पांच माह बाद प्रत्येक दो

माह में निंदाई–गुड़ाई के बाद पौधों में मिट्टी चढ़ाने का कार्य किया जाता है। खरपतवार नियंत्रण हेतु खरपतवार नाशक जैसे–ग्लायसेल, पैराक्वाट आदि का उपयोग किया जा सकता हैं। प्रत्येक गुड़ाई के बाद मिट्टी चढ़ाने का कार्य किया जाना चाहिए।

फल का पकना तुड़ाई एवं तुड़ाई करते समय सावधानी

यह फसल लगाने के लगभग 12 माह बाद फूल आते हैं। इसके लगभग 3 माह बाद घार काटने योग्य हो जाती है। जब फलियाँ तिकोनी न रहकर गोलाई ले लें तो इन्हें पूर्ण विकसित समझना चाहिए। कटाई केले में फूल निकलने के बाद लगभग 25–30 दिन में फलियाँ निकल आती हैं पूरी फलियाँ निकलने के बाद घार के नर फूल काट देना चाहिए और पूरी फलियाँ निकलने के बाद 100–140 दिन बाद फल तैयार हों जाते हैं जब फलियाँ की चारों घरियाँ तिकोनी न रहकर गोलाई लेकर पीली होने लगे तो फल पूर्ण विकसित होकर पकने लगते हैं।

उत्पादन एवं लाभ

एक हेक्टेयर बाग से 60–70 टन उपज प्राप्त की जा सकती है जिससे शुद्ध आय 60–70 हजार तक मिल सकती है। केले की खेती में प्रति हेक्टेयर करीब एक लाख रुपये की लागत आती है। प्रति हेक्टेयर 3080 पौध लगते हैं। 16 माह के इस फसल में यदि तीन हजार पौधे भी तैयार हुए तो प्रति पेड़ से मिलने वाले ढाई सौ रुपये के केले के हिसाब से साढ़े सात लाख रुपये का उत्पादन होगा। वहीं, दूसरे व तीसरे वर्ष में केले में पौध आदि नहीं लगाने पड़ेगे और उपज हासिल होगी।

बीमारियां

केले की फसल में कई रोग कवक व विषाणु के द्वारा लगते हैं जैसे पर्णचित्ती या लीफ स्पॉट, गुच्छा शीर्ष या बन्ची टॉप, एन्थक्नोज एवं तनागलन हर्टराट आदि। नियंत्रण के लिए ताम्रयुक्त रासायन जैसे कॉपर आक्सीक्लोराइट 0. 3 प्रतिशत का छिड़काव करना चाहिए या मोनोक्रोटोफॉस 1.25 मिली लीटर प्रति लीटर पानी के साथ छिड़काव करना चाहिए।

पौधों को पाले से बचाना

कड़ाके की ठंड से केले के पौधों पर विपरीत असर होता है। अधिक ठंड में केले की फसल को 80 से 90 प्रतिशत तक नुकसान हो सकता है। ऐसे में केले की खेती करने वाले किसानों के सामने पौधों को अधिक ठंड से बचाना एक कठिन कार्य हो गया है। अगर आप केले की खेती कर रहे हैं तो यहां से आप पौधों को अधिक ठंड से होने वाले नुकसान एवं बचाव के उपाय देख सकते हैं।

इससे होने वाले नुकसान अधिक ठंड में केले के पौधों का तना एवं पत्ते फटने लगते हैं। पत्ते पीले होने लगते हैं। फलों का आकार छोटा रह जाता है। पौधों के विकास में बाधा आती है। पत्तों के सड़ने एवं फफूंद जनित रोगों के होने का खतरा बढ़ जाता है।

बचाव के उपाय

खेत में पर्याप्त मात्रा में सिंचाई करें। सिंचाई करने से मिट्टी में गर्मी बनी रहती है और भूमि का तापमान कम नहीं होता। ठंड में सिंचाई करने से तापमान को 0.5 से 2 डिग्री सेंटीग्रेड तक बढ़ाया जा सकता है। शाम के समय सिंचाई करने से बेहतर परिणाम मिलेंगे। शाम के समय खेत में हवा की दिशा में घास–फूस, सूखे पत्ते एवं लकड़ियां आदि जलाकर धुआं करें। खेत में धुआं करने से तापमान को 4 डिग्री सेंटीग्रेड तक बढ़ाया जा सकता है।

भविष्य में रोजगार की संभवनाएं

प्रदेश में केला की खेती की अपार संभावनाएं हैं। प्रदेश के बेरोजगार युवक एवं युवतियों के लिए आमदनी का एक अच्छा जरिया साबित हो सकता है। क्योंकि यह फसल कम समय मे तैयार हो जाती है। और यह अधिक मुनाफा देने वाली फसल है। इस फसल की खेती करके युवा आत्मनिर्भर बन सकते हैं। केले की कुछ प्रजाति ऐसी है जिन्हें हम आसानी से उगा सकते हैं जैसे जी–9 ड्वार्फ कैवेंडिश, रोबस्टा रसथाली, नेंद्रन, हरीछाल,पूवन इत्यादि प्रजातियों को आसानी से उगाया जा रहा है । यह प्रजाति खाने में बेहद स्वादिष्ट और अधिक उत्पादन देने वाली हैं। इनकी खेती आसानी से जा सकती है।